हो गया। पुसँ की कला के विकास के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि आयु के 35वें वर्ष तक उनकी कला में जो रोमांसवादी उमंग, ऊष्म रंग संगति का प्रभाव, स्वच्छंद अंकन पद्धति एवं स्पष्ट तूलिका संचालन के गुण थे उनके स्थान पर नियंत्रित रेखांकन, कुछ ठंडी रंग संगति आदि शास्त्रीय गुणों का दर्शन बाद में बनाये चित्रों में होने लगा। सम्पूर्ण चित्र संयोजन अब बौद्धिक विश्लेषण के साथ व अभ्यासपूर्वक किया जाने लगा। मुखाकृति शास्त्रीय नियमों का पालन करते हुए आदर्श बनायी जाने लगीं व मानवाकृतियाँ मूर्तिशिल्प के समान ठोस बन गयीं। रंगों में शुष्क व कम चमकीले रंगों को प्राधान्य मिला। संक्षेप में कला के उत्तेजक व नैसर्गिकतावादी तत्त्वों का स्थान अमूर्त व विषय के दार्शनिक पक्ष के तत्त्वों को दिया गया। पुसँ पुरातन शास्त्रीय कला के निष्ठावान प्रशंसक थे व उन्होंने कारावाद्ज्यो की कला को दिशाहीन माना। इसके बावजूद वे मानवीय एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रेमी थे। इसीलिये उनकी कला शास्त्रशुद्ध होते हुए उसमें ऐन्द्रिय सौन्दर्य का आकर्षण है। उसमें शास्त्रीय कला की उदासीनता नहीं है बल्कि वह नैसर्गिक चैतन्य से सजीव लगती है।

आयु के 30वें साल में रोम जाने के बाद उन्होंने जीवन का अधिकतर काल इटली में ही बिताया किन्तु उनकी कला फ्रेंच कला से अधिक सामीप्य रखती है जिसका प्रमुख कारण है उसकी भावुकता। तुलनात्मक दृष्टि से उनके चित्र छोटे आकार के हैं। उन्होंने धार्मिक व पौराणिक विषयों को लेकर चित्र बनाये व एक आत्म चित्र को छोड़कर व्यक्तिचित्र नहीं बनाये। इटली में निवास होने पर भी उन्होंने फ्रेस्को चित्रण नहीं किया। पुसँ के द्वंद्वात्मक सर्जनशील व्यक्तित्व की विशेषता यह थी कि वे सौन्दर्य के प्रेमी थे किन्तु उसको उन्होंने संयम से नियंत्रित रखा। वे रंगों के प्रति आकृष्ट थे किन्तु उनको उन्होंने प्रमुख स्थान नहीं दिया। उनको सत्य प्रिय था किन्तु उसको उन्होंने आकस्मिक व क्षुद्र तत्त्वों से पृथक् रखा। उनकी शास्त्र निष्ठता के बावजूद उनके निम्न चित्रों को हम मौलिक एवं प्रतिनिधि मान सकते हैं, 'संत मॅथ्यू व देवदूत', 'सेबाइन स्त्रियों का अपहरण', 'फोसियाँ की शव यात्रा'। शास्त्रशुद्ध रचना-सौन्दर्य के कारण पुसँ को सत्रहवीं सदी का सबसे श्रेष्ठ चित्रकार माना गया है। आधुनिक कला के जन्मदाता सेजान ने कहा था, ''मैं पुसँ का अनुसरण करना चाहता हूँ किन्तु निसर्ग के सानिध्य में।''

क्लोद जेले जो क्लोद लोरँ (1600-82) नाम से विख्यात हैं, व्यावसायिक जीवन के प्रारम्भ में रोम चले गये व उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वहीं बिताया। वे ऐतिहासिक प्रकृति चित्र बनाने में निपुण थे। उनके इस प्रकार के चित्रों में वृक्ष, झरना, पहाड़ी आदि प्राकृतिक अंगों को महल, मकान, भग्नावशेष, मंदिर आदि मानव निर्मित पुरातन वस्तुओं के साथ चित्रित करके काल्पनिक दृश्य का निर्माण किया जाता था। जब वे किसी ऐतिहासिक या पौराणिक विषय को लेकर चित्र बनाते तो अक्सर पृष्ठभूमि के प्राकृतिक अंगों को इतना महत्त्व देते कि वह प्रकृति चित्र के समान बन जाता। प्रकृति चित्रण के इतिहास में उनको अग्रगामी चित्रकारों में स्थान दिया गया है (चित्र 64)। प्रभाववादियों के समान उन्होंने दृश्य की बाह्य यथार्थता को महत्त्व नहीं दिया बल्कि उसमें अपनी कल्पना के अनुसार परिवर्तन करके उसको मनोहर व भावपूर्ण बनाया। अतः उनके चित्रों को यथार्थवादी के बजाय

Scanned with CamScanner

कल्पनिक प्राकृतिक चित्र कहना उचित होगा यद्यपि दर्शनीय प्रभाव में उनमें और यथार्थवादी प्रकृति चित्रों में कोई अन्तर नहीं जान पड़ता। उनके पारदर्शी जलरंगों में बनाये स्थूल प्रकृति रेखा चित्रों का प्रभाव परम्परागत शैली के चीनी प्रकृति-चित्रों के समान है। बॅरोक शैली के अन्य फ्रेंच चित्रकारों में से वीजी ल ब्र्यूं, शार्ल ल ब्र्यूं, ब्लांशार्द, ज्यां जुवेने, क्लोद विन्यो

Scanned with CamScan